॥१॥ श्रीगणेशायनमः॥ श्रीहनुमतेनमः श्रीवसुतपदपनवोमतासोरी
धीसोधीनितिहेइ॥ कुमतिवीनासनस, मतिकरनसोमंगलमुदि
तकरेइ॥ अलखअमुरतिअलखगतिकाहुनपायोपार॥ जोरिजुग
लकरकविकहेहेतुहेतमतिसार॥ वैद्यग्रंथसमथिकेरचोसोभा
षाज्ञान॥ अथदेवाअपगटकरियोअध्यरोगनिदान॥ समति
अपेसोकातरोकविमतिपरमअगाध्य॥ वैद्यमतोसवनाम
ध्यतीहेषिय[illegible]ग्रंथसुप्रकास॥ केसराजसुतनयनसुअग्रध्यिक
धमैनेवास॥ पृथमनसालसनकहोहेषिग्रंथमतिसोइ॥ पुनी १
ज्ञानोअनभावहिजेसीममतिहोइ॥ अथसारंगध्यतरा॥ जोतिपति

छालिष्यते॥ कर अंगुष्ठनि जमूलमे देषिहु नसा प्रकार॥ जानहु सब दुषजी
व को पंडीत करहु विचार॥ आदि पित्त पुनि मध्य कफ अंत पवन नस रूप पचान॥
त्रिविधी नसा लछन कहतो सो जानहु वैद सुजान॥ सर्प जोक का गा कुलिंग
गति पित्त नसा रहि जाय॥ हंस मयूर कपोत कफ नाग जलौका वाय॥
चलइ मंद कफ वहुरु गति कवहु वेगी कराइ॥ जुग मदोष कर कोप मनि अं
तर करे मराइ॥ तितीर लवा वटेर गति सोय मनी सन्निपात॥ चलै छीन
अति सीत होइ नसा करे जी अघात ११॥ घुप्या चेपल वमनी चलै उसतरक
की जानी॥ प्रियरात त्यक को पुनी कहत अगम भीर वषानी १२॥ चलै वेगि समूह
तप्त होइ ज्वर लछन मय मनीय॥ करहु चित्त सारा मुजि कर जो सुष पावै जीव १३॥

२ अथ सुलछन सोरठा ॥ सुभ सुलछन होई ए अंग चढे आवै जो नर । सो तपु
रूप कर होइ वे दसो जो बोलै सच १४ । सुंदर बेनु रसु जानपु रूपलिए आवे वे
घर ॥ स्वेत वसन फूल गंध भूत सुलछन के रै: १५ ॥ अथ रस मजसि मत्तम ॥ २
सुलछन के ॥ मंगा हत रज टा प्यर लै जो हि अगार ॥ मूल फल फूली
ल छौवा आयु धन सकपारे १६ ॥ नमाला टलु सचन करम हि उठन कठा ॥
ते ल लेगार हि न कूल ब्याकुल अप्या मुका ॥ १७ रत्न कुंभ गवाव सनन स
स्य नग बन करा ई । ऐ ही जो आवे लैन को आगे पग न धराइ ॥ १८ ॥ अथ स
कुन सु मेः ॥ दधी घृत चंदन संख फूल करत रोद पुजीन ॥ अछत ध्वज मि
ष्ट बगजन कन्या गो वरमी १८ ॥ अथ व्रषभ कुसल बचरन पसुर मान

गलगीत॥रूपानामावेरूपनिरंतनगुरोवनमित॥सुरासिंघासननमेरुपनि
पत्रवहिंतरूनाति॥सनमुखआवेवेघकेभेखसकुनविचारि २१॥रूप
समसुखपतिघरा॥दुखकठीनअरुवकुमुषवातउतपतिसुजानरक्त
पितवातपद २२॥तिनदुरसनुन्यगरवदनजोसकोपअलेषमानहोइ॥लछन
सर्वश्रीदोषकेयुगमचिन्हकेभ्रमनिहोइ॥२३अथपिततकफहेतवायनि
दान॥चोपाइ॥विषमाननजूषदाइकाइ॥छुध्याजीघासैवहुतश्रगार॥
कटुकतितिक्षमजनमदिरापान॥तेकेअगिनकोध्धिपरमान॥उस्नसुखाइ
रूपमेगमे॥आप्रियातिद्वपहतीसमे॥कातिकजेठअसवैसाष॥पित
कोकारपगटकेभाष॥२६सरूपहरूप्यतिलनवनितभोजनेनकरैत्रिप

२ दिनसेवै ॥ फागुनचैत्रसमैकफहोवैः ॥२७ वोलैतुंगवातपुतगहै ॥ चित
थमियानकहै ॥ रुजावाइकढुकेनिजासे ॥ संध्यासमैसोततनलगे ॥
नछुनकेकैसेलासोरकियेपुरारवायतनहोइ ॥ होतनभरि[redacted] ॥ ३
सीरपोअजोमावमहमेदवसावनमासा ॥ पुनिजगनाठपगीतकरी
वा॥ जोछठमास ॥ अवपितकफवायकेलछन ॥ मुखकटुताव्या
कुलपरलाप ॥ मुखहि धपरस्वेदपुरतापमूर्छाहृतस्तपरप्रीत ॥
लछनसुनसुनहु पितकेमिता २८ ॥ अबबकफकरुरवासीस्वास ॥
मीठावदनमंवकरनास ॥ हियाभारगलेगारहै ॥ कफकेलछनए ते
कहे ॥३० देहिपीगतालुतरैश्रालसतेश्रगिरैवोकरै ॥ देहिसीतल

निद्रा नास।। क्षुधा अंग बहुत होइ तास।।३१ मुख कि न मुष फीका रहै। उसन प्रीत
काय ज्वर गहै नैनन कै विनै कोगव बानि मारुत लछन ते जानि ३२ अथ पि
त कफ वायु पाचार।। त्रिय संगम अरु विजनाति रत लिल अस्नान।। भोज
न मधुर सुगंध ता पान करत को पति नेहान ३३।। छार कसैला तिक्त कटु तप्रो
ह कउ पवास।। वचन विरेचन स्वेद पुनी गोतइ कुकफ नास ३४ त प्रोद कव
त उसन रवि मर्दन तेल सरीर।। सुरा पान नेह दहन इक ते जाइ समीर ३५।।
अथ काल रोगानां तसाध्य लछन:।। सोरठा।। होइ श्री बाजी सुगीन।। करप
हना भीसुतपहि मद्दु हसना परबीन सु गलछन ताके कोगा।।३६ चौपाई।।
रहि अंग रहे चैन न्य।। सुष निद्रा अवै पर संन्य।। सुभ चिंत वनसु नेजु व

४ वकहै॥स्वादगंध्यसवकेगुननहै ३७॥विनुपसेवदज्वर जाकेहोइ॥करहुवि
किसाताकोजानि॥सोनरजीवैकहोवखानि॥३८॥अथकालज्ञाननारश्व
सोध्वलछनम॥दोहा॥जाइसुमारुतपित्तगरूहुपि त्तहोइकफरगेहा॥कफ
स्वावैजवकंठहिपानततैनवदेह॥३९॥सोरठा॥कंठविषैकफहोइनि ४
ता तापुनिसीतदिनमरैसुतेगीसोइकछुनचलैउपाउतिस४०॥
इंद्रियंगरहैचेतन्य॥दोहा॥गुदामुखसुस्वरहीनस्वरकासस्वासपुनि
जासु॥व्याकुलहृदवकीसोपतननतेहिजमपुरहिनिवास४१हृदैच
रनकरनासीकानाभीहोइहिमजासु॥सीततनपटजीमकोरहेतन[illegible]म

पुरता कोवा प ४२ अथ हितोपदेशात ॥ रपनघतजलतेजमहछायादे
षदुखानि ॥ तीसेरहितननदेषिर नासपछमेजानि ॥ ४३ ॥ मंजेन के
रे सु त्रिय अंग ॥ करपदहहृदयविचारि ॥ सुबहिरतत काजहि सोम
तकहोइ निहारि ४४ ॥ करवी चरधिप कवहे अवेन के छवे गंध्या ॥ मत
कजानि जो ताहि कोता सुरुव जमफध्वी ४५ ॥ पृथकोलरानात ॥
अव्रा आहि जो अंतमगमध्यमुलपुनि सोइ ॥ नछ त्र इदुरविनाम
रपकनसाजवहार ४६ ॥ सोगीमत काहु तवेनाइजगजतध्याम ॥ सोसी
वकहै विचारि के कालचनध्यरीनाम ॥ ४७ इति श्री पशतवेघके सवास
अतमजनयनसुखविरंचोत्तवे घमहो तवनातिपरीछाइतलछन

५ सगुन लछन मुख पतिष्ठा बात पित्त कफ निदान नना ब्यासा ब्यलछन का
ल चे[illegible]के नामे प्रथम समुदेश:॥ अथ ज्वर उपद्रव दसा॥ हिका दाह देय ग्र मुर्छा
कास स्वास अतिसार। वमन अरुचि प्रमेह[illegible] ज्वर उपद्रव दसका॥ अ
थ सर्व ज्वर परसावर मंत्र:॥ समुद्र के उपर कंठ धारा नगरी वसत है:॥
धारा नगरी को कउन राजा अजैपाल राजा विजै देवरानि विजै देवरानी के
पुत्र शात पुत्र कवन कवन ऋषिया ज्वर सीत ज्वर जड़ी सीत वातर कत ५
एक हुतात तित्तरा व विरा फलो नेके पंडीत रहे तउ विजै देवीरानी की सेत्र
पाउ दे इरस के पिंड हनु मंत विरते ती सति फुरो मंत्रा॥ अथ द्वितीय शावर
मंत्र:॥ तेर समुद्र के सेत्र सुनीच दरी भो आयगोरख नाथ के सुमिरन ते

ती नी ६ षप जा इ २ कत्तराद्धवतरा लिपतरा चवतरा त्वरजुडी ग्रामे तो गोरषना
षकी दा हा इ स्वरमहादेवके दोहाइ। फूला नेपंडी तज्जा षजाय जाय। वद
ती की हा लद्धी षक्के देव मुषरहा के षरा वषा रावरा छव।। ६ सपक्कट
सतावरी पिस।। ध्यवेन क्षीरमे लेहु चा जीयाक्षीरसर्व घृ तपाकसोध्वरो।
सीतोपुस्य है सूष्यिवृष्यि करो। रक्तपित्त ग्रामि लेपित नाश।। स्वासकास
ग्राधिप लेवासे।। त्रियातरुन बालक विनक्षीर।। ध्यनपपस्वतन तीस्व
निरा।। वद्र सोकनवद तिपलवघृतमहमुनी।। सा कमा हम लिसंध्यव
गुनी।। षासोध्यासी मृदी सुजंगा।। प्रतिस्या इकोक स्रोम्न नेग।। कषने
लमह धोतीकेमुषराषेजो कोइ।। कह्योकुलिंजन सुमग तावचेनमंग

६

नरितोइ।। ब्रलीवचवालावपदेहि।। सिवाकुलेजननुतफलेहि।। मधूसमे
तमेजनकविराय।। वचनमेंगाढ़नमिटिजाय।। सोरठा॥ धूर्त्तमूलत्वेच
कमस्वासकोसकफकोठिजीमचंघातवामकसिरदुमप्रानमदनासनवि
का।। दोहा।। अर्धदिकनकत्तीकनीअजात्तीरपलपंच।। टंककवेमहनक
रैठधजरमितत्तपुपंच।। अपरामवानगुटिका।। सवैया।। पारदलोगसमावि
षगंधकमारचदैपुनिमारचसानि। जातिफलाअफमागमिलेइसदेतितिउ
फलकोमलतानि।। मंदकफीद्रवसुलेखरतेचकवातवमीक्षमकासपरानी।। ६
माषवटीइसकंधसूतातिअपारअनीकजीतेअमिमानी।। दोहा।। अति
सारग्रहनीगदनकीनेवहुपचार।। मंदविसूचीगुरेकुजपनीचार।।

अथ मंडूरवज्र चोपाइ॥ संककनस्म पलरसवत लिजै॥ लोहचूरति विकेसम
लीजै॥ अष्टभाग तिसेकि टमी लाइ॥ तीता तुल्य मधु बरिवनाइ॥ पंडु कमलके
कु भेद अपार॥ मंद अग्नि निसत सूलविकार॥ अथ वडगोली॥ चोपाइ॥ त्रिफ
लासोठि मरिच जनवाइनि॥ वायविडगजमोहामिलाइनी॥ लवनपंचहै क्षार
मगाय॥ कुष्टसतावरि सिंगीयाय॥ चित्ता कर्ष भेय चपलाकरै सकल अर्ध
विजीयाको प्यरो॥ अष्टकर्ष तीस चूकमिलाइ॥ निकरसनि जवति श्रावनाइ॥
हूप्यासी धुसंग्रहनी हरे॥ कर्षउदरदुष्वक्षनमेटरे॥ वडवानलचूर्ता॥ चे
पनो भिउटेविनसूक्षमकरिकूठ॥ दुनेगुडस्त मकोदयघछुटौ॥ वंद्ग
लिनिजंवूरि चलाइ॥ तातेकवलकठिनगदजाइ॥ कफिसकलज्वर

१ पेलिपने॥ स्त्रर्थ्य टं करसना सावघाने। चपलाक्षी वामरिच लघुजीर।
ग्रथकलव नस्त्रावलेप्पीरा। मुदकगल करजत्त कराइ॥ मीठत्त स्त्ररोच
कस्त्रतिसुखपाइ। स्त्रथप्रेतवसीकरनमंत्रः॥ कामाख्येन मः वीरहनुम
नचलिहनुचलि कहाकरे जलहयतिकवंप्पे वतंतिलवप्पेहंत्तवप्पे १
पुजावेप्पे लेघुरावडानरसिंघवंप्पे येनमंत्रे पवनवाप्पी जैडीठीवाप्पि
जैघाटकोवाप्पि जेवाटकोवाप्पि जेपवनवाप्पि जैपानीवाप्पि जेश्म
पनमसुके फेरतिघालि परमसुतो तीरगरी होहाइभ्रीरामचंद्रकीः॥ स्त्र
।१ सडठघ रतोस घनदेत्तपूटलीसा। वा हीनोरघसीलाइ९ कुवस्पत्ता१

बीस॥ मूल त्वचा फल पत्र मगावे॥ वनते पुगट भ्रजीर कहावे वरन कहीं पुरति
हूं लेत॥ हीरजु तै नासत गद सेत॥ अरि लक्ष्म कै देवसकों सिवा बीज लरा
मीये॥ चं हूं देव सघसी लीये गेर मधि-नाखिये॥ मोमदेवसकी पूप
तिपमूल पुष्पा सीये॥ परसि हांत जी पृथ मत्रे हवुरा कै ठे भ्रप गदहारीये॥ सोमल
सा बुनसा जीघार जल सो बसी नो जपर हातरारा॥ हूत्रे हेवसजा लीन हिधरे॥
सोमसा ध्यजन मकेव सपरे॥ मूघी त्रिघा पुला पक नीसी रोव तंत्र मचित॥
ने त्रगाह कदुता वदन एलघछ नज्वर पित॥ अथ कफ लछन॥ दोहा॥ स्याम
कास रोमांच गरवे हर निद्रा सीत॥ मोह सी पील जो कपाय मूव एलछन ज्वर
यात॥ अथ कोलरा गनातू॥ मल ज्वर लक्षरा॥ सोरठा॥ दोह सो पपरलाव
याग॥ अथ कोलरा गनातू॥

८ ॠस्थि पित्त सिर पर तनुम॥ ९ लछन मल तापक है सो वद विचारि कै॥
अथ जीरन ज्वर लछन काल रोना रो॥ वृद्ध नविरेचन ठ ददु सवव हु
उमार हो इ जा सु॥ लछन रस ज्वर के कोदु विग्रंथ सप्रकासा॥ अथ पि
द्रज्वर लछन॥ निद्रा जा मन न फुटत तन होत अंत प्रस्वेद॥ कहें सो वे
द विचारि कै ९ लछन ज्वर भेद॥ अथ दिष्टि ज्वर लछन॥ तं मन न वढ
त अस तन न उदर पिर कढु ग्रंग॥ ९ लछन ज्वर हवि के कोसु ग्रंथ प्र ८
संग॥ काल ज्वर लछन॥ सीसत पत प्रस्वेद तन कर पद सीतल होइ॥
९ लछन ज्वर का लके तिसहि उपाइ न कोइ॥ अथ ज्वर पर पक्क लछन॥
सोरठा॥ सप त दिवस गत वार हस वासर कपि त को॥ कफ हदस दिन ज्ञा

१ जानहु ज्वरपरपक्क हो ॥ अपाचरविमुक्त लछन ॥ सिरकंठपरस्वेद
तन देहि लघुताजास ॥ भूषपकेबहु भूषहीकर लछन ज्वरनास ॥
अथ लघुसदरसनचूर्ण ॥ चौपाइ ॥ सोठि कटाइ पुहकरमूलकक
रास गीकुटकचुर ॥ मुरहठी गीलोइ अवकासा लोधरनीहरदी पिपरा ॥
मचक लोजीता हिसमान ॥ पित्तपापवरापत्र जो आन ॥ अगरव्यमासा
कुठ मिलाइ ॥ लोचनवालापुष्पपाइ ॥ तजपतिससूरदाउ हितान ॥ मोथा
पठोलजवाइनी आनी ॥ चितामयोपिपरामुलए वोच प्यमेलहु समत
ल ॥ नवपाजीचीरयतता जानीसवचाघप्पतेअर्धपाअनि ॥ इनवोध
पनकोचूरनकरहु ॥ नामसुदरसनलघुतेहि ज्वरहु ॥ तपतनीरसो

८ पीउनकाल ॥ आठज्वरनासेततकाल ॥ हिकमेहितकानकाइ ॥ पांडरोग
किमलाजाइ ॥ संन्यपातसबतोनरकाइ ॥ कृमजुवाकीरोगनशाय ॥ स्वा
सकासकीपीराजाइ ॥ गदछनेकनासहितजानि ॥ हमएकचितकहिव ८
खानि ॥ सोउसाकचूर्णः सोरठा ॥ सेंध्वापुहकरमूलमोथाकटुकीचीरा
यता ॥ दंतीसीवाकचूर ॥ पिपरसोठिकचूरपिपरीसोठिपशेलदल ॥
पिपरमूलगीलोइ ॥ जुगमकटाइपापाराठकेतेइसमभूमिरतपतनीरसो
पिजीए ॥ विषमतिसोज्वरजातिजानितका ॥ चौथाज्वरजाइ सोउस्ता
कस्मरनामकहि ॥ रसमंजरीमतमहाज्वरांकुस ॥ रसविषगंधसूपक
तिठकटंकसमलेइ ॥ कनकबीजविठकध्यरीनीकहिताहसहेरा ॥ स्वकर

सलोमरिकैकसेजोसिरतिहोइ॥गोलिबाइप्रातउठिरसयष्ट्रकोयाल॥तापपि
त्तकफवाततकोनासहोततत्तकाल॥इजाती जानितका चौथाउज्वरजाइ॥
सुषमविषमज्वरसीतज्वरउदरविथानरहाइ॥केरजभीरीगुदसोपहगो
लीजोखाइ॥महाज्वरांकुशनामध्वती॥अथसीतातिज्वरांकुश॥संषमस्म
हरतालसमज्वरछटाकलेहुविचारि॥लीलाथोथाहोइटाकतिनीपुटदेहु
कुमारि॥मासीसेपुटमाहथ्वरीताकोगजपुटदेइ॥पहरहोइ॥पाचकरौ
तीनलमयेसोलेइ॥होइरतीपरमानगहिषंडसोदीजेजास॥मातषाइपथ
दीजीएहोइसीतज्वर नास॥कलोज्वरांकुशयथपंडीतलेहुविचारि॥

वैद्यक
१०

नासहि तापअनेकविधिव्याधिसियपुगाढ़संसार॥ अथ अंग्रेजन ज्वरो को १॥
पिपरीमेन सी लेनी व फटकेरस करे सेपाइ॥ गोली अजहु नखन जु गज्य
रजी है घमिटी जाई॥ अथ पित्त ज्वर के चूर्ण:॥ सोरठा॥ पित्तपापरा अति १०
पिसी पियहु जल लै मै गति॥ टंक तीइ परमान प्रात पित्तज्वर नाशै॥ अथ पि वैद्यक
त्तगह ज्वर को चूर्ण:॥ चौपाई॥ लौंच नवाला मोथा आनि॥ चन्दन पित्त
पापरा जानि॥ सोंठि उसीर नीर सो लेई॥ प्रात पित्तज्वर नाशा करेई॥ कफ
ज्वरकह नाश॥ दोहा॥ सोंठि मरीच अरू कायफर पिपरी ताहि मिलाइ॥ [redacted]
[redacted] नास लेइ नर नीर सो कफज्वर छन में जाइ॥ अथ वाय ज्वर कह चूर्ण॥
सोरठा॥ सोंठि सोंचर पाइ पीपरी मरीच चिरायता॥ केदुसी वा स्फुरलाइ चु

साहरे जो वाय ज्वरा ॥ अथ वद्दसंग्रसात ॥ मल ज्वर कल्ह क्वाथ ॥ सोरठा ॥ ग्र
पक अमृत कोरवाल मोथा करु किहरितकी ॥ पिठ क्वाथ तत को सम
ल ज्वर को नास होइ ॥ अथ रसज्वकोहचूर्णा ॥ दोहा ॥ जमो १ ग्रहृ
रीतकी सो चरत मधि पाइ ॥ पिसि पीउ जल तप्त सो रस ज्वर भ्रम न मे
जाई ॥ अथ काल ज्ञानात ॥ भेद ज्वर का उपाई ॥ दोहा ॥ मदनिकीज
अंग कहृ ते लेति लो करलाई पुनि मंजन जल तप्त सो भेद ताप न रहाई ॥
अथ काल ज्ञानात ॥ हृष्टि ज्वर कह चूर्णा ॥ दोहा ॥ पिपरी मरीचि चि
राय ता सो ठि हिंग सम सोइ चूर राखि जे टंक सोई नास हृष्टि ज्वर होइ ॥

११ वायपित्त कफ ज्वर कहु चूर्ण ।। दोहा ।। मोथा सोठि चीरायता पित्तपापरा जा
नि ।। पीपरामूल गीलोई । पुनि रसम पिस कुक्राति ।। चूरण सो रहप्रसक्त
के तीजलसो पीजै प्रात । अनिल पित्त कफ दाह को हि इसवक घात ।। अ
थ सीतज्वर कहु चूर्ण ।। दोहा ।। पिपरि सोठे गिलोइ पुनि गुमाता तिती ११
लाई । जल सो पीजे टंक दुइ सीत तापन रहाय । अथ सारंगध्वरा
त विषम ज्वर कहु चूर्ण ।। दोहा ।। पिपरे हरे आंवरा चित्रक से प्पा
सोई ।। चूरण पिजे निर सो नासत सर्व ज्वर होई । व्यक्ति समस्त हेत
दिलेः । य ज्वर कहा ।। क ढाइ फूल कर मूलै जानी ।। सोठि गिलोइ सो सम

करिग्लानि॥ पुहकाठकीजेनीरमीसोइ॥ कफस्वासकासज्वरविषमप
राई॥ अथमनोरमागंधपांतचेतुर्थ्यज्वरकोधूनि॥ दोहा॥ गुगुलपाव
पुनिहलसनवसनमेपाई॥ धुनिदीजेप्रातउठिचौथाउज्वरजाई॥ अथ
सारंगधरात्॥ हिक्कास्वासकासकफअवलेह॥ मेथीपीपलीपीसोकेम
धुसोचाटहुप्रात॥ हिक्कास्वासकासज्वरइनकोकरतहैघात॥ अथ
पज्वरकारोगविधि॥ मरिचसगतुलसीरसदेई॥ अब्छतापज्वरनास
करेई॥ अथपावांगुंमाकारसपाई॥ लसनसुधिसनपोपजिभिनाई॥ हितउप
देसलेघुलाहादितेल॥ लायक चतुरगुलापायसी॥ हागुनेकाजीमा

हुपचाई।।पहनेजेग्रंगजोजाई।।दोहासीतज्वरविषमपराई।।अथसंनिपा
१२ तरोगचिकित्साआनंदभैरवरस।।सिंगिफमरीचेअरुपिपरीमान।।
विषटंकजोकरहुसमान।।अद्रककरससोंगोलिकरहु।।एककरतीपरमा
नसोंव्यहु।।दोहा।।गंधकपारापिपरीचैजीराहोई।।पंचलवनत्रयषा १२
रविषअभ्रकसोंठिजोसोई।।रसअद्रककरसबोपानेकोसबरोषप्पिन
पुटदेई।।पंचरतीपरमीतकरहुगोलीसोवंध्येहु।।रसचिंतामनि
पहकहेकरेनासकसंनिपात।।अमवबेसीबूलेकफहोइविषमज्व
रघात।।संनिपातकहकलिकाकामतेकनवैहरीरस।।दोहा।।अथ

रसोकाइलोज॥ धुरासानिजवाईनीसेन्द्रहुग्यभरुमेउ॥ भुगावरावरीगो
लिकरेवासीमातपुनिलउ॥ तापरगोजीघाईकेघरितेईजवजा
ई॥ हारहोईवहुभातिसोदिनउनचालेंगीधोई॥ दोहा॥ त्रिफला
त्रिकुटिम्हरउविषटंकटंकसवलेइ॥ पारागंध्यकतोलिकेग्रह
टंकभरीदेइ॥ कनकमूलअ्रयटांकधरीरसनेगरइखापाई॥ गुंजा
समगोलिकरहुपानसमेजोषाई॥ १०१ सेनिपातसोतांगउवरवे
गोमतापमिटाई॥ यहमतनंदकीहरैवहुरित्रिदोषमिटाइ॥ स्रय
सेनिपातकहअंजन॥ सरिसोसेघ्याकुठमिजोसेतमरीसमभाइ॥

म्रगीरोगउनमादत्रमम
१२ अजाम्त्रसोपीसीकैकरुअंजननयननाइ।। त्रिकुटानीफलाफ़ि
संनीपातनरहाई।। अंजनसंनिपातकहा।। त्रिकुटानीफलाफिं
गवचसंव्यवकटकिमिलाई पिपलीमरीसवसिरसफलसवकों
गवचसव्यवकदुकिमिलाई पिपलीमरीसवसिरसफलसवकों १२
नव्यसमनाई।। अजामुत्रसोपीसीकैकरुअंजननयननायई।। म
गीरोगउनमादभ्रमसंनिपातनरहाई।। तिमीरीरोगनिसीअंध्यपु
निश्रुतदोषखिरवती।। नयनकमहतविचारीकेऐतेहोतनिवती।।
त्रिकंठककाथसंनिपातकहा।। पीपरीमुलचीरायताखोठिसुसमृ
करीलेई।। काठाकरीकेपीजीऐसंनिपातजोहरेई।। कुकुमलवंगची

रा यता॥ अकरकरा जो मिलाई॥ पिपरी अद्रक तिसो ठकहो जवषाई॥ से निपा
त उन मां द्रकफ तंद्र मारूतकास॥ सीतसुल भ्रम मोह ज्वर इह को करत
विनास॥ अथ अतिसार चीकीत्सा॥ लोध्र मरहठी माई॥ मा जुफल मो
चरस पाई। मरीच मतसगो हडी मकलौ वंसलोचन अमगुरु लि॥ कं
द्रजा यफल किंकफल कथ विंड गअवरे सम तुला॥ एसमकौ षध्य
नाग सु चारी॥ पेट की जगति निरधारी॥ पोसता जल सो गोली कीजे॥ दं
क १ कै परमान पवरी जे॥ तंदुलजल सो पिवै जानि॥ ताकी गुन को सकै
वषानि॥ उदन मठा पथ देई यं जास॥ सातीसार सपत दिन नास॥ अथ

बृहत्संग्रहात् गंगाधर चूर्ण॥ मोथा अरु लसोठी अरु धाई॥ बेलपती
१४ सम्मेत चरस पाई। लोध्र लै जान आमको बीस्रा॥ कुठ पाठी इंद्रजव लिया:
लोचन वाला पुनी मध पाइ तिदुल जल सो पियउ मिलाई। माठा भात
भोजन जो लेइ अतिसार हरो मनु थिर मेरो। अथ जोग सत्तोत गंगाधर
चूर्ण॥ सोठि धात की मोचरस अरु जमोद समभाई। पिसी नरु लोपि १४
जीये अतिसार हरे जाई॥ बृहत्संग्रहात नागरादि क्वाथ ज्वर अतिसार
कहु॥ सोरठा॥ सोठी कुठ अतीस मोथा गुरुचि चिरायता॥ काठा की
नै पीस अतिसार ज्वर समरहो र ज अतिसार क्वाथ॥ चौपाई॥ लो चेन
वाला कुठ पाई। मोथा बेल समलैउ पिसाई या को काठ अरु मिलाई॥

सो नित अव्रति सार कही जाई ॥ अथ तारंग ध्वरात ग्राव अव्रति सार कहत कूरा ॥ सेध्या
हिं गपति सा ॥ सो चर कहै निरसंग ॥ ग्राम अव्रति सार न हि सो स जो नर पीवत
जाति के संग्र निरोग चिकित्सा ॥ धना पंचक का थ ॥ सोर ठा ध्वनी ग्रा मोथा
वेल लोचन वाला ॥ सो ठि मिलाइ ॥ का ठास म करी लेहु ग्राम सुल संग्रहनी क
हु चूरा ॥ चौपाई ॥ मोथा सो ठि गी लोई अतिसा ॥ तप्र निरसो पिं जी योस ॥ वा
यम रुची संग्रहनी जाय ॥ वायसूल हुन माह न साई ॥ अथ तारंग ध्वरा तहु ॥
ग्राम सुल संग्रहनी कहु क्काथ ॥ गायन देहु ॥ सो ध्वपाठ लेजाल मोथा वेल सोठी
सो पारी होइ ॥ ध्वनी या पी सी गी लोइ वालो कुठ पाई लगाइ है ॥ स म पीसी
वो बध्या द क्काथ की जे पात उठि के पीजी ये ॥ ग्राम सुल से मुख संग्रहनी

नाम्हइनकाहुजिह्व॥इतिश्रीपंडीतवैद्यकेशवदासकृतमजननयसुखविचितो
१५ वैद्यमतोसर्वज्वरसंनिपातअतिसारसंग्रहनीरोगप्रतिकारस्थितीसमु
द्देशः॥अथअरसरोगचिकित्सा॥सारंगधरात्॥अरसावटीका॥
एकमरीचविजीसोठीसोचितामूठप्रमान॥सुरनकंदसमभागलेहु
चूरसाकहुसुजान॥द्वगनगुडपाथकेगुटीकाकहुरंकटोरी॥पै १५
टम्याफरसगुलमगदनासवचेसीगोडी॥अथचूरनविवदसीका॥गोमी
वुटीअग्निचलतलवगसंगपिजीये॥टंकदोईदिनसातरसकेवदेसी
नारहे॥तिलमाखनवलुदिनजोधाईरसवदेसीतेगपराई॥गजके

सतीमिश्रीनवनीत ।। सिध्वयोग योगजानेहु यह मित ।। चूर्णमूसलवचअरु
मूसली कुटसो छिसमनाई । पिसीत कैसो पीजी ये रोगव वेसी जाई ।। सोरठा ।।
सेंध्याहि गपानीस [illegible] वचअरुहरे सुसमअश्वगंधमानतंकैसो पीजीए
अतिसारतुरत हि हरे ।। ववेसीकफ्फ्युनीगेंडाबास महलेइंपूमगंड
महिजीरे सपदेवसपरमानप्रवलववेसीनारहे ।। अथमेंहरोगप्र
तिकार ।। दंतीहृदसुआवरापीसहुनीरमीलाइ । प्रातसमेलेपनकरहुको
अगेंदरजाई ।। गडवीलीका आनीकेत्रिफलारससंजोग ।। घातसी-भावकु
जानीके जाईभगंदररोगलेपाररचेवेलीपत्रवड सेध्यासोठीगोईसवीभ
गंदररोगनसोई ।। दुग्धमातपथ्यकराइ ।। अथगुल्मरोगप्रतिकार ।। अजमोद

सेध्याकनासोचरतारेवायपनिरंग।।अथ छलोचलजवाषारसोठिलेकुलजी
१६ कैहिगा।।इनकोचरतीकीजीरे घृतसमसाईमिलाइ।।गोलासलवि
सुचिकारसम्रजोरणननसाई।।अथपकोषउदरकालोषदः।।लेवरा
सोफिगार।लुचासोरातिहुसमानरंकरकजोनीगलीयेनासकोषो
दरजान।।अथसर्वउदरकोषु।।चाउरसेहुदूध्यसंगतिनीठकपरमान
होनोघनमकजीकेहीजेबेदसुजान।।पातसमेजलतपूसोतेनर
वोषध्यसाई।उदरतेघसवनारहो।गेतरवेषअधिकाई।।अथपकोतको १६
वोषध्यः।।सूरफोकाकीजरजमाती।।कालग्रजिनिचलहेकुपि
नोनि।।होहेसगफोतनरहाई।।जेमिपानीपरपानगतीराई।।अ

थ ग्रा मवातचिकीत्सा ॥ सतीसोंठीसनहेजननाविलवपारा ॥रुहारहू ॥
काजीसोजोनेपिट्सो पावैथाजोनेवास ॥ पीपलादिचूर्णाग्रा
मवातकरा । पिपलीपाठिकठाइजानि ॥ सोठिसिवासित जीराग्रा
नि ॥ सोथाचिता पिपरामुल ॥ गजपिपलीमेलहुसमतुल ॥ तवूनी
रसोपिजैपीस ॥ कूलसूलतेसुवभिनहितिस ॥ श्रमवातसोनहारी ॥
चासीप्यासोछनमैजारी ॥ आमवातकचूर्णा ॥ सोठिविडंगपतिस ॥
वचपइसजवषाशानिकेलिजे ॥ समकरीपीसतपूवारीसगपीजीरैआम
वातनरहाई ॥ हतसकोराउदरमहगाजोप्नःपराई ॥ सवसोथकफक्षय ॥

१७ जरपन निवाहरै गोलोइ ॥ क्वाथ मसो करी कै ॥ पीजी ऐसो पाविया
नहीं होइ ॥ कतो गंध्य विचारी कै ॥ क्रिमरोग प्रतिकार हितोपदेसात ॥
सेष्पातीची वीडंगा फल पिप्पलू समकरी योग ॥ तप्रक्कस सपा पिजी
ऐना नक्रिमीकारोग ॥ जो गसतात न चूर्ण ॥ त्रिफला त्रिकुटा सिवी १७
वेकनी चव्यचाष्ठ नीप्रानी ॥ बद्रि कुठसु विडंग समम चूर्ण करहु
मिलाई ॥ म्रजा मुत्र सगपाइ के इक तीनी परमाना ॥ सपूर्व समत्व
पीजीऐ होत क्रिमनाकेत नीना ॥ खपकु लरोग प्रतिकारा ॥ सोचेर सोठी
म्ररूपडू कमुलतिगम्नुजीलिजैसम कुला ॥ तप्रनि रस गहइ मिलाई

सूलअफरा[illegible]सपराई॥ हिंगलोहकचूर्ण॥ सेंधात्रिकुटाजीराहोईतिंगमु
त्रिअजमोदासोई॥ चूर्णमातसमगघोंवषाईवायगुल्मवहुसूलपराई॥
पंचसमचूर्ण॥ तुंवरपुहकरमूलविवरनतीनीजवषारतिंज॥ अमया
तामक चूरणा॥ अजवायनसोठिविडंगमिलाई॥ टंककठंकपरमानए
वोषपसमवलीजीऐ॥ सोंवतीनीटंकजानिइनकोचूरणाकिजीऐ॥
तप्तनीरसहपाई॥ टंकएकजववपिजीऐ सूलगुल्मकफजाई॥ आमवात
अनासई॥ सोठिमतीचीअरुपिपरीसाजीताकिमीलाई॥ पिसिपीयाउ
जलतप्तसोसूलरोगमीटीजाई॥ अपपंडुकमलवायुउपचार॥ त्रिफ

लोकदुचिरायता वृसातिव गीलोरी । पीजेकाढ सहत सगनास पंउका
१८ होरी । अथवलेह ॥ त्रिकुटा रजनी आंवरा लोह चूर्ण पुनि पाई ॥ माईठकम
धुघृत तसगपकु कमला जाइ ॥ अवलेह ॥ लोहचूर्ण त्रिफला कटुहरै ते
उपाई ॥ कमलवाय तुरत हि हरै मधु घृत सो जेल बाई ॥ अथ पोटरी ॥
फलवेगलीसु पिसी कै करहु पोटरी जोग ॥ सुधाहु नासा स्वास सै जा १८
ई कमल नारे ज ॥ अथ अंजन ॥ गरुहर सु आंवरा करहु अंजन नयन हि ॥
कुमलवाय का नास होइ मसूरप थ जो बाइ ॥ अथ नरुभी ॥ फुलेआक
के लेउ गसमम पी सहु बले मे आनी ॥ गोविंदि जैपा नउठिहि तो नेहु इकाल

नि॥ अथ नहरोगप्रतिकार॥ अस गंधसोठिपिपरीलवंगा निम्बीपाई॥ जल
सोंजैपीसोकैछैरोगनरहाई॥ अथ चूर्ण॥ त्रिफलासोठिवायवी
रंगमतिचपिपरीमोथाहि॥ मूलनेरुगदेवदारुतजलायचिपद्मपत्र
अहरासनागजकेसरीसूमिलाई॥ सतेइनिमिषभी छैरोगनरहाइ॥
इतिपंगीतवैद्यकेशवदासस्रात्मजनयनसुखविरचितेवैद्यमनोत्सव॥
अरसमगंहरनुलेगन्नामवातकमशूलपंडुकामलतेगप्रतिकारतीय
समुद्देश॥ अथहिचकीरोगप्रतिकार॥ बिठियापीकीलावरसपिहूते
नीपाई॥ नासलेइनितप्रातहिछिचकिवतीनकाइ॥ चूर्ण॥ मरिचलवं

गमिब्रिति जु सैगगरी वेरकीपाइ। मध्य संग हीजे पीसी कोहि चवकी रोगनस
इथ्वुनि सयनै सिलाकरं दसुन्ना निकेपी सहुस करीयो ग:॥ मुख मरु चूरी
लिजीऐ नासे क्रिचवकी रोग॥ हृदि रोग प्रतिकार॥ चंदनसे प्याइलायची
लेजा नृ मली कै नील वंग॥ वेरगरी श्रृ कमल कै पराग न केशरी सु
प्रियंगु।इन को चूरण कीजीऐ मध्य मिश्री सु मिलाइ॥ प्रात समै जो
चाटि है छर्दि रोग मिटि जाइ॥ श्वपश्लेह॥ मयनसी रले वंग कवल
विजं म्हृत्लाची॥ चाटहु मध्य के संग छरी रोग का नास होय॥ स्वास
रोग प्रतिकार॥ सोठि सु पिपरी शृंक रवरा संगी॥ पुहकर मूल कचूर

मारंगी॥ सो ध्यामरी चतपत जलसो लेई॥ महा स्वास को नास करेई॥ ख
थ चुरी॥ कटाइ पुहकर मूल जानि॥ वा सम सो ठिकु लेजन न आनि॥
पिसी पीउ जलत्त पूसो स्वास कासपरा रोग कासरोग प्रतिकार॥ सो ठि
वहेरा पिपरी का कस्योगो जानि॥ मारंगी सुकु वातीहि लेउ समकी स
हु आनि॥ गोलि कीजै नीरसो ठकर कसम सोई॥ निसा जो मुख मे रा के
ए नास स्वास कर लोई॥ वा सम सोठि पिपरी वचा कटाइ पाई॥ पिसी पी
अहु जलत पत सो स्वासि प्यासी जाई॥ वटिका॥ विष सो ध्या मरि च जु
रुनी पंचा॥ • निपरमान॥ गोलि मुग समान करु कफ स्वास पिके लानि॥

वैद्यक
२०

अथ मंदाग्नि प्रतिकार ॥ पिपरी तीनौ हरितकी सोठि सो चरपाइ ॥ तप्त नीर सौ पिजी ऐ मंदाग्नि पराइ ॥ अथ चूर्ण ॥ पिपरी लोन हरितकी चित्रक जैहु समान पिसी पियहु जल त्तप्त सो अनुपा ठवं ... ॥ अथ गटी ॥ गीफल त्रिकुटा लोन हि अजवानि सौंठ ॥ सम कीने चरवा गोलि नीर सौ मंदाग्नि नहाइ ॥ चूर्ण ॥ गज केसरी सैंधा करा ॥ सो चरवा यत्नि रंग ॥ त्रिकुटा त्रिकला त्रिविनेवर चिता हिंग ॥ अजवाइन जीरा दोइ अनारदाना ने अगनि ॥ इन ओषधीन को चूरा कहू ॥ तीनी पर तिचूकि धरहु ॥ टंक इक जो प्रातहि खाइये ॥ मंदाग्नि सो जन में जाइ ॥ अ

वैद्यक
२०

थविसुचिकारोगप्रतिकार ॥ तेलतीलीकाअग्निकरपदमर्दनिकीजी
ये ॥ तोसवविसुचिका नासि ॥ विध्ययोगपंडीतकन्हैयालाल संग्रहात् ॥ सोध्या
करुचूकपुनिलेहु ॥ तिलकातेलतपतकरीदेहु ॥ करपदमर्दनिकीजीये
गुनीसुलविसुचिकानाई ॥ इति श्रीपंडीत वैद्यके सर्वरोगसंग्रहात्मज
नयनसुखविरचितेरसिका छंदकासख्या संमदामि विशुचिकाना
मचतुर्थसमुद्देसः ॥ १४३ ॥ वायप्रतिकार ॥ साराग्लवरात्र ॥ जीरासेध्या
हिंगसंगकरहवा तेलेपकाई ॥ लेपनकीजेप्रानउठीश्रेडवढ्यिनि
टिजाई ॥ नीपरलाचूरणकिजीए गाइमुत्रसंगखाइ ॥ श्रेडवढ्यित्

वैद्यक
२१

रत्त हिहरै कफ़ो मै इस मफ़्जाइ॥ सरफ़ो काकिजरपुनिलेई टिंकसफ़्की वैद्य
बसगदेइ॥ प्रमेहप्रतिकार॥ मृहमूती हुंडीम कलीसेत कुथसमरवाइ॥ २१
दिनदस चूरटिकछ लेपरमेहविहंडसरवाकुलीजायचीसीलाजी
तपुनिलेइ॥ सर्वप्रमेहकादूधहरेरवाइसातलंगदहीरसगीलोइका
खानिकेपीजेसातमिलाइ॥ प्रातसमैलीजे बेनुररोगप्रमेहपराई॥
मूत्रकृच्छप्रतिकार॥ एलुवागोधूकनारेनुकापाइ॥ खसखसमेएँ
रंडजडकाठाकरहूमिलाइ॥ तिलातिरसुरसुनिप्रीलोधसंगमतीं
खाई॥ मूत्रकृच्छसवतेयकोप्रमेहपथरीजाई॥ पाससूरउलोलछचीद

लिसो दही मिलाई ॥ मूत्रकृछ्र सब तो हरे कहै वैद समुझाई ॥ सिलाजीत
लूंण जवषार ईषत जल सो पिजे ग्वालि ॥ मूत्राघात छ सब दे षंकाल नास
होइ हित जानि ॥ गोषरू जवासा हरे आंत्रि पवन ने कनिया लाजा
नि ॥ यह काठा कीजे सहत मिलाइ ॥ मूत्ररोध छन एक मे जाइ ॥ चूर्ण ॥
त्रिफला सेधा गोषरू बीज ककठी पाइ ॥ तपनीर सो पिजीए मूत्र
रोध हरि जाइ ॥ अथ दंड संग्रहात ॥ वरुना सोठि गोषरू लेभ्रत हरे सम
लेहु अस मेद करयाला छाजसहित जनादेई ॥ सो नहि गजे षषार सगरो
प षसि जाइ ॥ मूत्रकृछ्र प्रबु उदर दूषदे तेरोग नसाइ ॥ अथ प्रमेहरोग
प्रतिकार ॥ पुकेर मूलचित्र वता बनी सोठि कथेर ॥ हरड हरु रस्तव

वैद्यक २२

चमोथापिपरामूल॥ग्रबन्यारोहिलवसिरसकुठकरौफलपनरजानि। वैद्यक २२
म्गीरोग७अनमोदकफत्तायविसुचिकानि॥वचवुरासानी
सहतसंगदैकरोईजोलेई॥म्गीरोगकीहानिहोईयहवोवद्द
गोहि॥वनीरसवचकुठसंगशंखाहुलिजोदेई॥गोघृतमे
यहसोकेम्गीरोगनसाई॥अपकुष्टरोगप्रतिकार॥चौपाई
त्रीफलावासानीवपतोलेखैरगीलोईनेहुसमतोल॥चुतिपि
तैजलमेवाला।कष्टरोगजापततकाल॥अपचुसा॥त्रिफला
मजीठगीलोई॥कटुकीनीवकीसासहिजनोवचहारहरदवड़िग

वासा हे व़ग रुस्तो ग्रनितेसमपीसी चुरना करहु विप्यिसो पीजे पा
नीसंग।।कुष्ठ रोगसो प्रलेव़ जागे नाहें ग्रकंड कोग्रंग।। लेखुंतजीठ
दि।।मंजीष्ठा त्रिफला कटुरजनी बीजो लोई।।देवदारु वचपीसी कै काठ
कीजेसोई।।प्रातउठि पीजी रे वातरक्त नरहाई।।अथ कुष्ठ कमंडलेयामहूषके
द्रुकुष्ठ मिटाई।।अथ स्वेतकुष्ठ कोलेप।।गुंजा निंबु कुठ वच चित्रो रे
वोषहसमपीसहु मिजा।।कांजि घसी लेपन करै।।स्वेतकुष्ठ नो निश्चे
हरे।।लेप।।अपिजा ल करहु प्रातिलेपकरहु पुनी राति को।।स्वेतदाग कोहा
नी सीध्य जोगन पनेहवो।।बंदसंगम हारा।।रवचरम्ना बरातसम करीले हु।।उठि

चोक
२३

सकारेक्षाथकरेहु ।। टंकदोइवाव चौपाई ।। स्वेतहगमासमहजाई ।। पा
मकेसेहुरसरीवे समानकरेमहिद्य नसैजोग ।। नचिकेलेपनकीजी
येनासयासकरोग ।। गंधकवुकवेडिंगपुनिलिंगरीफकूठसुजान ।।
हरदपवारसेंहुरसोपीसहुरसकरेश्राति ।। कनकनिवुदतेंदुलरस
लेपहुइनहिमिलाई ।। पामाविचचीदहुपुनिसे तेरोगनसाई ।। पात
खाकके भस्मकरीमारवनसंगमिलाई ।। दृढविवंचिकासवकहैतवन २३
रलेपकराई ।। गंधकहरदगीलोईलीलोथोधावाचवीसाजीचो
कसुदेई ।। सवतेदुगुनपचारचीजकटी ।। कटुकतेलमेपाई ।। मर्द

नकीजैतीनीदिन॥मक्षिघीगोवरलाइनासेपापमूनकविच्छी॥सुषलेप
ाहका॥कालीवलीहरदविडंगपिवरमुलसोछिकेसंगसोठीसुसगंप
वाचपीलेई॥लोचनककोरेकोजरदेई॥काजागुमीमतिचाकेपा
पात॥कालीजीरिदेषकिभातिनीलकंठकोसमतेलीलेई॥लेपन
गोमुत्रसोकरेई॥लहरीनीनाशाकीबहुहरइ॥सर्वदेषजोनिहचे
हरई॥यहवादजोलेपनकरई॥नासेव्याधिसवदेषहरई॥दोनो
ारहीसमपीसीकेलेपहुजलसैंजोग॥यामाहदम्बरुरवपनासेदे
नेरोग॥चंदनकुठसमालेपाई॥कमलगीतिवारोसमपाई॥लेपन

किजे जलनेघा लि॥ जतन्याधिनासेततकाल॥ अथक्षीपरोगप्रतिकार॥
केहलीपत्र किभस्मकरीताम्रहरहीमिलाइ॥ जेवनकौजेनीरसोछीप
वै॰ क॰ रोगनासाई॥ लेपन॰ चंदनहरीतालेकपूरठानि॥ सोलगामुखीपीजनमानि॥
२८ जंभीरीरससोलेपजाई॥ सोथभरोगछूनमहनासी॥ मोरषागंधकचंदन वै॰
भानिनींबूरससोलेपी॥ देवसलातपरमानथिभरोगकोनासहोइ॥ क॰
नासुभारोगप्रतिकार॥ अपर्वदुग्धकरीसिपदधिसोपीजैसोई॥ नि २८
जवाबदनपनेकहानासनासुभतोई॥ अथसस्त्रघात॥ केसोघदि॥
काकजंघा॥ कामूलपिसिकेसर्वघावपरदेई॥ पिरारकप्रवाहसव
तुरतहीधावमिलेई॥ इतिश्रीपंडीतकेशवबैदहासभामतेनेयम

सुजविरचितवैदमनोत्सवकुरंडप्रमेहमूत्रकृछमूत्ररोपवनस्मरी
स्मारीकुष्ठकंडुवामनदाद्रुविचचिकारपंचमससमुदेशः॥ अथ
वायरोगप्रतिकार॥ अश्वगंध्यसोठीजोतिलसमजानि॥ समतूल
सोमेलेघृतआनि॥ तेहिसमहीतेघृततमिलाइ॥ वातव्याधिछ
नमाहपराइ॥ मेंगसमालूमेंगरामेंठीतातिहिमिलाइ॥ चूररादीजे
टंकहोइवातरोगनरहाइ॥ विपतिचितअसगंध्याग्रानि॥ सोठिकलो
गीपीपरामूला॥ अकरकरालेहुसमतूला॥ इनेगुडसोगोलिकरहु॥
टंकहोइपरमानव्याराहु॥ प्रातसमेजवगोलीषाइ॥ वायचौरासी

पे६५ तहां न रहै।। टंक चारि सोंठि को लेहु मिरिचै चारि टंक पुनि देहु।। ती
२५ नी सेर गुड़ गाविषकहु प्यारहु।।अ प्रकार रस सेजो लिकरहु।।गुंजा सम गोली
परमान।।सीतहू निश्चै करि जान वाय रोग छन माहु पराई।।कलम पं१
सुमिरन पापजेउ जाई।।सोठि ऐरंड रास्ना देवदारु गिलोई।।काढा
पीजे प्रातउठि पिरावाय न होइ लघु विसगंमतेलको कीजे स्नानि।। २५
लघु विषगर्भ तइल सहजानि।।मर्दन करे अंग जो लोई।।वाय चउरा
सीतहि न रहाई।।अ कवायकोपुनजा।।छीले नहसुन कुठि केसी
रकरे गोदुग्धा।।वातसीत कहु फुरनी नासे अकाइकोरोगा।।दूसरा।।गुग

लमालका गुनि अस संग्यसो ठि गी लोई।। तीवी मष डे वीज पुनि सम क
रि सोई।। अ जंवाइ नी समपी सी के सव सम गु गुल पाई।। अर्व भाग गो
घी वृ सो गोली करहु मि लाई।। त पुडि कम प्कु दुष्य स गंट के रोइं जव
बाइ।। कटि ग्रहरा घनि जोइ न दुष कोवडिकुनु गहवा या।। नाडी जानु
पादको वाह प षरुड सोई।। पिसी सहत संग लै जीरे पुर्व लेउ षा लेमि
टाई।। कासा पारी माह कर ती से वार घ ते व्याइ ले पकर हु लेउ चर
नामे दाह विथा नहि होई।। अ पक फर को फैसती मरी वीपी परी मोरे गी
पुनि जानि।। मारा वाल वेग सुनि रेस मपिस हु आनि।। पान संग जो री

चे०१५ तहा नरहै॥ टंक चारी सोठि को लेहु मरिचे चारी टंक पुनि देहु॥ ती
२५ नी सो हगाविषमहु ध्यारहु॥ मकरस से गोलि करहु॥ गुंजा सम गोली
परमान॥ सीत है निश्चै करी जान वायरोग छन माहु पराई॥ ध्म
सुमिरन पापजेउ जाई॥ सोठि एरंड रासना देवदारु गिलोई काढा चे०१५
पी जे प्रात उठि पिरा वायन होइ लघु विसरजन तेल को कीजे भ्राति॥ २५
लघु विषग भेतइ लस्हजानि॥ मर्दन करे अंग जो लोई॥ वाय चउरा
सीते हि नर होई॥ सकइ वायको पुलाजा॥ छीले लेहसुन कुठि केसी
र करे गो कुपा॥ वातसीतह उफुट नीनासे सकल को रोग॥ दुसरा॥ गुग

लमालका गुनि अवगंध्यसो ठिगी लोई ।। तीवी मघडे वीजपुनि समक
रीसोई ।। अजवाइनी समपीसी के सवसम गुगुलपाई ।। अर्ध्यभाग गो
घीवसो गोली करहु मिलाई ।। तप्रडिकमध्यु दुध्यसग टंकटोई जव
बाड़ ।। कटिगहराघलि नोइ नदूधकोवड़ फनु गहवाया ।। नाडीजानु
पाद कोवाहप छड़ सोई ।। पिसी सहासंग हि जीरे पूवल उषा लेति
ठाई ।। कासाधारी माह केरीसे वारघृत ल्योइ लेपकरहु लोईचर
णमेराहविथा नहिहोई ।। अपक फकोधकैसतीमरीवीपीपरीमोरांगी
पुनिजानि ।। माराबालबेगसुनिरेसमपिसहु आनि ।। पानसंगजोपी

वै६क जो२मरमितटंकसुहागा चै॥ कफखासीश्रुरु स्वासकोहोतहेका
२८ नास॥जेवगभरजौ पिपरीसोठिके टाईपाइ॥ पिसि चूरनजलले
तपूसोकफखासीदुब जाई॥ अथ गंडमालाप्रतिकारः॥ पिपरी
अरुकचनारफनिचिफलानासमकीप्रानि॥ पिसिपियपुन
लतपूसोनासगंडकाजानि॥ सोहिभैरगीपिसीकेतंदुलजल
संजोग॥ लेपनकीजेकंठपरनासगंडकारोग॥ अथ सारंगपरा २६
त॥कचनारगुगुलहसपलजिफलाकटुकिलीजीये॥ अयवल
त्रिकुटापारवकाइनफरकेतोलव्यरकबकबीपरमाननतसपत्र

जग्रस्लायची ॥ गुगुल सम करी आनि गुटिका कीजे टंक होई ।
खपरहा पसंग है ॥ अथ वा पच्यते पूजले ॥ मुसीका एक रेडी आन
समे न रजानि कै ॥ गंइसा लावे न कुष्ट प्रपचा गोला ग्रंथि गद मो
हन गंदर हुष ॥ अथ चूरना सइ वसत्य सुनि ॥ अथ मधु रोग पुतिका
र ॥ तवा खीर लाय चौ मो यो करला ई ॥ मुष मेरा बहुपिसी कै वहन
पाक रहोई ॥ इंतर रक्त कि दाह ॥ वासा मौथा कुपरि त कुठ कनिजा
लो ध्य मजीठ मिलाइ कै पिसहु सम करी आनि ॥ यह ज्वो यह हन मला
रक्त गमन मिटि जाई ॥ पिपरा की ठकी सवहरे नि षची च सुपराई ॥

वैद्यक लोनहरदीकुठलोध्यमिलिएवोवकसमनाई।।नौंगरससंगलेपीयेमू
२७ षकिछायाजाई।।अथनासिकारोगप्रतिकार।।द्रुवकुसुमहरीत
कीहाडीमफुलेमिलाई।।सीतलनीरसगनासदेरलगमनमि●दिजा वैद्यक
ई।।सोठिमरिचीअरुपीपरीगुरुसोदिजेआनि।।पीनसषेहरुसीत
दुषनासससवनकाजानि।।मरीचीअरुवंदालफलेपरीमीसीतल २७
दुपलेई।।नासजैननरनीरसोपिनसरोगहरेई।।अथजोगसं
तातनेत्ररोगप्रतिकारः।।रसवतलोनहरीनकीगेरुहरदीमिलाई।
जलसोंघिपरलैपीयेनयनपि●रमिटिजाई।।सेंधाअरुकटुतेलमि

लिकासपत्रमहसोई।।करीरगरांश्रंजननकरहु नयनपिरनातीहोई।।७प्र
पश्रंजनसवलवायका।।पारा जसता सीसा श्रस फमोती मुगा जा निछ
कछिहटंकजुलिजिए कोंसथा जमहिपाई।।छतीपयसोंरगडीकै
श्रंजनदृष्टिकरेई।।सवलवायकानासहोइ धुंधमातपथ्यदेइ।।
श्रथसवलवायुकोरोग।।तवायसामातिकैलेउ नीलाथोथारंचे
देई।।फेनसमुद्रफीटकरीश्रनिसीपचुनासमकरिजानि।।गोछ
तसोंकासामहिष्यरो।।करीरगगयवश्रंजनुकरो।।सवलवायवे
लीनकानाइ।।कहीश्रथतेयहसमुहाई।।७श्रथपोटलीनेत्रको।।

वैद्य
२८

नीरा कातिर फूकरी नीफलो सोइ देई। रसवति लोप्य परी जुलइ॥
हरुओ षदस अंगुलानि कै कर हुपो ट्रो पिसी॥ सर्वपिर कोनं नास रघो
नै नहु। [illegible] निर्मलि तीसा॥ अ॰ पं अंजन ती नीर वायु को॥ सुरमा सिं
ध्या संषपु निमेन सो लत्रिक जुतु अनो॥ केतकी फूल अरु मिसी
तिसा गह फेनु समान॥ अंजनु छेली दुग्ध सो ति मिरो गन रहाइ॥ फु
लो षोरा वा [illegible] फुनि नैन पीर सु मिटाइ॥ अथ चूरी॥ तेगपुति कारसः॥
आकलः मु निति लप चरसच कान रोग विचसो पाई॥ वहिरा पिराय पीच
हुवर ते ते गनसाया॥ अथ पाको षष्य करी तेगके अवपात महल

वैद्य
२८

हलुनया[illegible]रितापहुतेतोपरो।।कानविचरसमेलियेपिवसूलन
गीगेई।।अथकर्णरोगकोअषध।।देवदारूवचसोठिसंगसिं
धासोपरलाई।।अजामूत्रसोतप्तकरिकानपियेजुमिटाई।।अ
थकर्णसूलपीवकोअषध।।सिंधावछौंकामूत्रतोरंचक
तप्तकरे।।मूलशाह[illegible]वल्लपिवदूष्टरतेतेगनरहाई।।अथसी
सरोगप्रतिकार।।वातसिरवर्त्तिकोलेप।।देवदारूकुठकाय
फलअरडतेलजुमिलाई।।कांजीसंगजोलेपियेवातसिरो
रुजाइ।।अथकफसिरवर्त्तिकोलेप।।पविपिविबाकंहः।।सरि

वै०६५ रासना कुठ जा निछइव चया पत्रामो थ्या आनि॥ सोत पुनिरसो लो वै०६५

२८० जोई॥ छुना नमहिकपसोरवर्त्तिजाइ॥ अथ पित्तसिरत्तीकीलेप॥

चंदनसिवाकसेरकुवउसीजे औवरे॥ कमलविजकुवे लपितसि २८०

रोरुजनासहोई॥ अथलेपजी हे घसिरोवर्त्तिकाकुठमरी अस्का

यफरजरीसकीलेई॥ तपुनिरसोलेपीरे सो सिरवर्तिहरेई॥

पिपलीमरीचहरीतकी रुतीनो समभाइ॥ कांजीसोतिलेपकरीपी

गनीरकीजाइ॥ अथलेप आधासीसको॥ कुठपिपरेसारिवावचच

मकुनेठिजानि॥ कांजीसेतीलेपकरी आधासिसिगनी॥ अथ

अग्निसीसा कौ लेप पुनः ।। ७७ तसो सेप्या पिसी कै नासलेइ परभात ।।
सिद्ध जोग नैन के होइ अध्यारी सीस घात ।। अथ यंत्र कन्या बोसी सीकालि
मी के रीरवा चै नि लोला गासो अग्निसीसो जाइ ।। अथ उग्रपंथ
सिसी का गद्दू सोरठा ।। अज्जै पाल विधु अग्नि नीला थोथा निंबीसो ।।
जइ होर विजौ नि ।। वसी पहि वाल कमुत्र सो लेप पाछे नेलाइ उवेचिन
गजुगत तनि ।। ७ लेअग्न्यासिराजाई ।। पीठ नासे अंध्यको ।। ८८ अथ उध्वंको
नाम सोरठा ।। बीज वेत तिज्ञानि नासलेइ नरप्रात उठि ।। होइ उध्वंकी
हानि सिद्ध योग नयन के हित ।। ८८ अथ के सवध्य नेकासो बध्य ।।

वै॰ १५
30

८	११	२	७
८	३	१४	१२
१६	११	८	१
[illegible]	[illegible]	१३	१५

फूलति लह लेगो घृत च तमध्य माहि मिलोई ।। केस हु लेपन की
नी के चिकुर पच्च हि श्रुप्ति को ई ।। ५० ।। अथ सिर को कर कका
र्यो बध्या ।। आति क कोरे कौ जड करी समीप दधि ताख ।। पाइ
सो सव्वे जन करहु तेइ जुको धार नासा ।। ५१ ।। अथ दुहिके दुःखप
कु को औषध्या ।। हस्ती दंत की भस्म करि पिसहु रसवंती सोइ ।। छेति पय
सो लै पीये गात्रा केस पुनि हि होई ।। अथ कल्प लिख्यते ।। लोह चुर रज भंग
रा नीलप त्रिफल तीनी ।। अजा मूत्र सो लेप करी सिर कल्प रहे वहु दीना ।। 30
इति श्री पंडीत केसवराज कृत तेपन सुख विरंचिते वेदमनोत्सवे बा
लचित कफ गल रज्वह मुख नासिका नेत्र कर्ण सिर रोग प्रतिकार नाम अष्टम

समुद्रशः॥ तब आषिर गजकेसरी जई। नेश्वा जो चंदन देई। तंदुल
जल सो लेइ मिलाई। बरा लै गुना ती नी को जाइ॥ अथ अग्नी बधी प
द्दलको॥ गजकेसरी तंदुल सी ताहि जै निरामिलाई॥ पुंद्ररोगका
नासकहोई। मसूरसा जो पथ्य थाई॥ अथ प्रयुष्यतो नेका ग्नी बध्या॥ व
लाइंडी श्री कृठास मलेहु॥ तोले कांठे सोचरन देहु॥ गापरजा पुष्य
हो इति सुनाति॥ मछ न करै तनोहि नतका जो॥ अथ पुष्यतो ने
काव तीका॥ दंति गुड जन बक्षार वीज तंवडी मेन फल॥ पीपले
पामहि प्याकृपि सेहु से लडहं ध्यसों॥ होहि पुष्पती सुनाति वनी

वैद्य

कैनगमहचरै॥ कयोजुपरउपकारसिद्धियोगएहजानितुं॥

३१ अथ अग्रौषधजोनिसुक्तनिका॥ सीरसकोपलेजायफलसा

गरुफेनुमिलाइ॥ वायविडंगइलायचीजगकेसरीसमभाई॥ वैद्य

जलसोजोलीहैजीरेदेकेएकपरमाननगमहरायाहुपल

सोयकग्रोअथ्यहितजानि॥ वंध्यागर्भजोहोइसुखजोनीतेवस ३१

मेनाहि॥ शालीमहजोहीरघृतयहजोपथ्यकराई॥ अथ पथ्यौषध

गर्भनिनेका चौपाई॥ मतिचसोठिपीपरेलेहु॥ गजकेसमसरसुकणइ

हि॥ गोघृतसोतौपिबैनारि॥ ताकोगर्भहोइतननिकाल॥ अथ पथ्यजोग्रो

षध्य ग र्भ हो न का ॥ सोरठा ॥ गज केशरि अस्वगंध्य सित लोचना साली फुनि ॥ पय पसो पावे वंध्य हो इ ग र्भ तत काल नीस ॥ अथ अपर
औषध्य ग र्भ हो ने का ॥ दोहा ॥ गज कसरि गो घी रस सो से रितु दीन तिजे
जा हि ॥ दुग्ध भात भोजन करै हो इ ग र्भ ति स जा नि ॥ अथ अपर औषध्य
ग र्भ हो ने का ॥ ध्येनु दुग्ध सो लै रागा करै पान जो नारि ॥ नास
लेइ रितु दिवस हि हो हि ग र्भ तत्काल ॥ अथ एक वस्त्री के उपा
य ॥ पाट ख्रवा ग पी सी कै करै लेप भग मा हा ॥ हो हि प्रसूती त
त्काल हि उदर पीर नु मि टा इ ॥ अथ लेप कल्पी स्त्री को ॥ सोरठा ॥

२६५ पथसेलूडकाअ्यानि लेपकरैनधनाभ्रिमो॥त्रियाकछूटकिोनि
छूनमहिहोइप्रसूतितीयः॥अथग्रन्थउपायकषित्रीके॥ज
32 उमूगीकीलेइकेकटीवंध्येकपीवधू॥तवहिपरीहरेहोइप्रसूति
तत्कलेमै॥अथगर्भजातानाहोइतिसकाओषधा॥प्यालजाल
कमलफूलअरुमुलठीपाइ॥तंदूलजलसोंपीजोरेगर्भपात 32
रहिजाई॥अथअंगसंकोचनप्रतिकारः॥दोहा॥पाइवाहेलोफ
टकरीमाइलोहकपुरवतिहाडकनिपरत्वचामानूपामतीचुरा॥
मदनगेहवीचधायके॥करेपुरुषसोंभोग॥योनीअषिक

सचकुरहइ नइन कोउ रोग ॥ अथ योनि संकोचने का औषध्य ॥ माइफला
वेफर करी माजू लोध्य जू मेली वे रुई जो पाइये तो सिकनु जाइ हेली ॥
अथ भग संकोचने का औषध्य ॥ त्रिफला लोद्र जू धातकी जासु नि
जइ फुनि सोइ ॥ भग महल्ले पजु सहत सों वह कुमारी होइ ॥ अथ औ
षध्य भग संकोचने का सोरठा ॥ मठा जु गो का आनि-मतु दिन धोवे
योनि त्रिपः होइ संकोच लखु जानि सिद्ध योग गुरि जन कहो ॥ अथ गोली
भग संकोचन का ॥ कस्तुरी करपुर सम गोली कर मधु पाई ॥ जोनी
मा हतो राखिये चीती सी कन्या होइ ॥ अथ बध्या योनि दुर्गंधि हरया को ॥

नीचपातकोक्काथकरीधोवेजोनिजुत्रिय।।दुर्गंधिताकोनासहोइम्रा
नेहग्रधिकिकरेइ।।ग्रथकुचकठीनकरनेकाउपायः।।ग्रस्वगंध
३३ मरुवावचनेकुठंसोईलेपनुकीजेनीरसोंकठीनहोइकचहोइ।।
ग्रथनासकुच।।जलतेदूलसोरठा।।जलतंदूलकाम्रानिनासलेइ ३३
ग्रातुहीवसही।।कठीनहोहिकुचहोइजानिप्रगटनयनेकहो।।ग्र
घग्रेवघ्ववपलहलेका।।तेलनिवकाघोनरलेइघनहोलेपाकेपर
देइ।।पीवजातिनासुरनासाइ।।कहोनयनसुवयहसमुहाइ।।हती
कुठानुतपूकसीकुचहिउपरप्यारेलु।।घनहोलेकोनासुहोसिद्धयोगु

जानेहु ॥ अथ बालकरोगचिकीत्सा वंदसंग्रहात ॥ बालककों
ज्वरलेहु ॥ काकड्यासींगीकनापतिस ॥ बालकचाटै मधुसोंपी
स ॥ कनापुष्प घचु दिजिन साई ॥ ज्वरा सहितपति जुबाइ ॥ २३ अथ वं
दसंग्रहात ॥ बालककै अतिसारकों अवलेह ॥ सोरठा ॥ बाला [redacted] सि
[redacted] लोद मिलाइ विल्वपातकी गजंकणा मधुसों कराय चटाइ ॥
अतिसार रुसिझुको हरै २४ अथ वदसंग्रहात ॥ बालककोरुदपाके प्रो
ष्पा ॥ रसवतीलावहनुदनपरीअरुखानेकीदेहु ॥ पाकीगुरुहर
रा मनगीरूरसिझयो ॥ जानेहु ॥ २५ अथ पुष्पचिकीत्सा ॥ विषमज्व

वै॰क

अर्क कनेर जड़ रस उपजत रकोपाइ ।। गोली की नै पीसी कै ली नै छाक सुकाइ ।।
३४ पुरुष मूत्र सो पीसी कै कर ह लेप स्त्री यः ।। दीर्घ कठिन स्थूल होइ षत भाग
अतियर हर अपलिंग स्थूल को उपायः ।। वचा कूठ गज पीपल अस्वगं
ध गाला होइ ।। महिषी माषन सो लै पीवे लिंग मूसल सम होइ ।। २७ ।। अ
पलेप स्थूल को ।। अस्वगंध पारद जं भ ।।। रजनी सीता मिलाइ ।। ३८
लेपन कीजे लिंग पर वृद्धि स्थूल कराइ ।। २८ अथ पथ्य मनको उपाइ ।।
अथ सेहुड को दूध पफ नील जा के जड़ पाइ ।। करपद नामि सु लेपी यो
थ मन है अपि को ।। २८ अथ लिंग हट करको लेप ।। मि छै

वृद्धि मसूरजा य फलवीज पवन्तरासो ई।। छ तसों सो इन्द्रीय लेपकरी
म तेक लिंग हृढ होइ ३० अपस्य मनकी व नीका।। अछू अकी मजू अ
नि कै करै वत्तिका यो ग।। लिंग छी न्न मरु ताविये वढ तकरै नर मोग ३१
पुथन निपका मचुती।। ताल मखाना मुसली सूंठि मंघुड पाई।। कोछ
बीज अपवंग धपु निसे मर फूल मिलोई।। वाला सतावरी सो चरस कुल ह
लकुडे जानि।। घांड दूध्य सो पीवै वढुनीय परमै तुजानि।। ३२ अथ काम वी
पास मूठीका लेख्यते।। कुकुम सिंगरफ जायफल ताल मखाना
पाई।। कोछ वीज तज मस्तकी अकरकरा जुर लोई।। लंवक लोपमाल

पत्र २६ क
35

पानस्र मजायनस्रुखुरासानि॥ तीनी भाग रेती जीय एक स्र फीमप्रमा
नु॥ रसविजया गुटीका कार्हु परमित टंक जु १ का॥ रोनसतै म घनक
रै लेखनारमहि अनेक॥३३ अथ धातुवृद्धिका औषध्य॥ चौपाइ॥ ना
जै सेमलकी जड ल्येहु॥ स्याम मूसली तिसमहि देहु॥ दूध बाद सो पीउ मि
लाइ॥ धातु पुष्ट बल लहि अधिकाइ॥३४ अथ दुर्गंध्य हरणे का औ
षध्य॥ चौपाइ॥ चंदनु रजनी मोथा कचूर लोद अगरु पदमाष कपूर॥
छड मरु वाग जे केसर पाइ॥ पकी जड आवले रलाइ॥ ईकीमनि की
जै जासु॥ दुर्गंध्य ताहि देह नमहि नासु॥ पिस्ते बसब नासहि जानि॥

पत्र २६ क
35